Schramm's Mass Communication Model

श्राम का 'जनसंचार' प्रतिरूप

Dr. Archana Bharti
Guest Faculty, MJMC
Sem-1, Paper- 101
Date- 30/06/2021

श्राम का 'जनसंचार' प्रतिरूप

- इस प्रतिरूप अथवा प्रारूप के अनुसार, जो जानकारियां प्रेषित की जाती है वह सभी को एक साथ नहीं मिल पाती है। क्योंकि सभी लोग एक साथ जनसंचार माध्यम से नहीं जुड़ पाते हैं।

- विल्बर श्राम ने अपने इस प्रतिरूप में जो ग्रहीता है उसके दो वर्गों की चर्चा की। जिसमें एक वर्ग 'प्राथमिक ग्रहीता' (Primary receiver) है और दूसरा वर्ग 'द्वितीयक ग्रहीता' (Secondary receiver) है।

श्राम का 'जनसंचार' प्रतिरूप

- इस प्रारूप में प्राथमिक ग्रहीता उसे कहा जाता है जो संदेश पहले प्राप्त करता है। जैसे कि–रेडियो, दूरदर्शन से संदेश को स्वयं सुनना।
- द्वितीयक ग्रहीता वह है जो किसी अन्य व्यक्तियों से संदेश सुनता है। ये समाचार अथवा किसी सूचना को सीधे जनमाध्यमों द्वारा नहीं प्राप्त करते। बल्कि ये प्राथमिक ग्रहीता से संदेश को प्राप्त करते हैं।
- श्राम ने कहा कि 'जनसंचार' के इस प्रतिरूप में प्रत्येक समूह में कई ग्रहीता होते हैं और ग्रहीता संदेश को ग्रहण करने के बाद उसका विश्लेषण और विवेचन करके अन्य दूसरे ग्रहीता को भी देता है।

श्राम का 'जनसंचार' प्रतिरूप

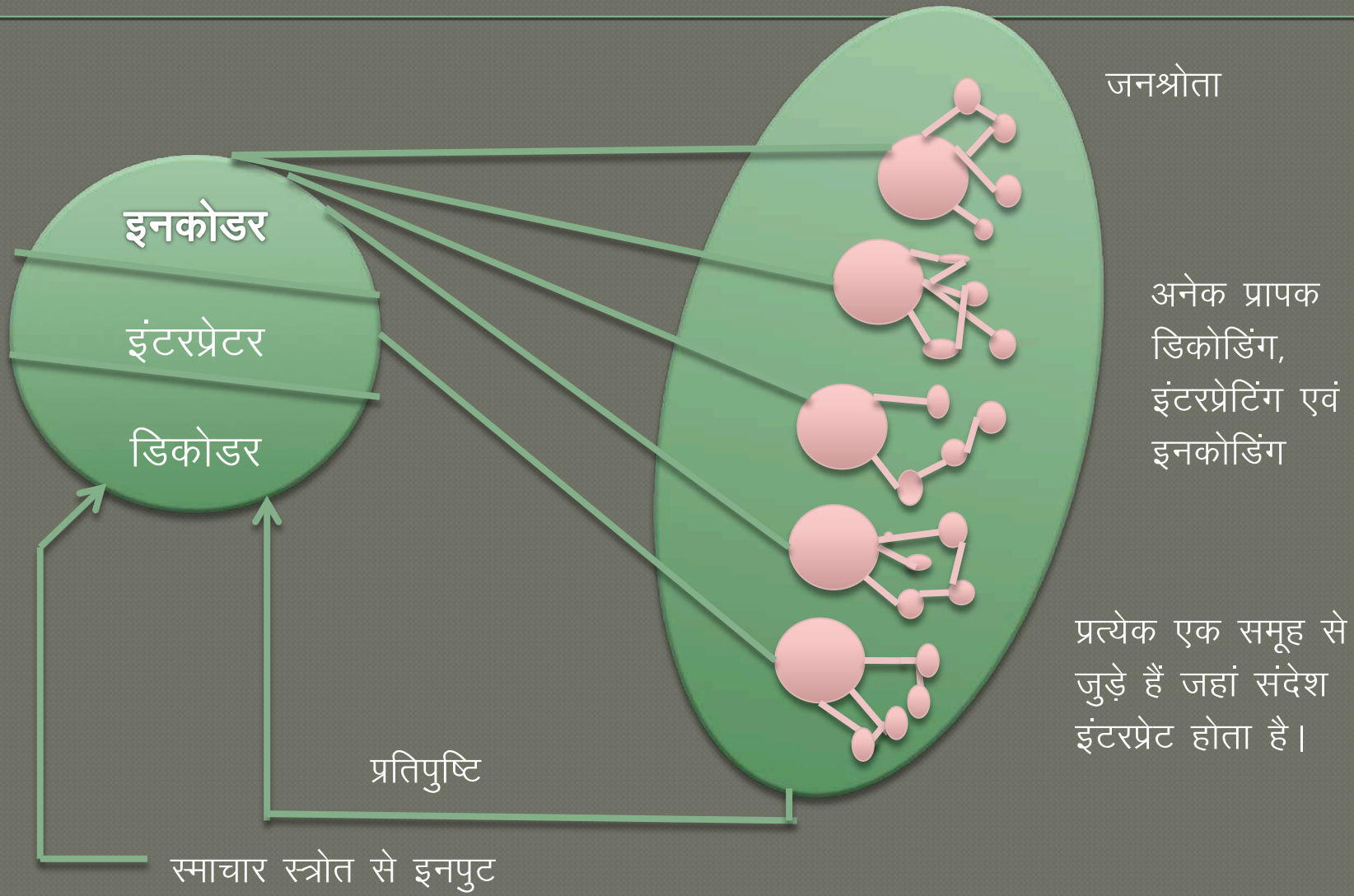

श्राम का 'जनसंचार' प्रतिरूप

- विल्बर श्राम के प्रतिरूप की मूल आत्मा मीडिया संगठन में है जहां वे सारी क्रियाएं पूरी की जाती हैं जिसकी चर्चा 'सरकुलर' मॉडल में की गई। ये हैं–इनकोडिंग, इंटरप्रेटिंग और डिकोडिंग।
- 'जनसंचार' के इस प्रतिरूप का मूल रूप यह है कि मास मीडिया के द्वारा प्राप्त संदेश जब किसी व्यक्ति को मिलता है तो वह उसे अपने समूह के दूसरे लोगों को शेयर करता है। यह अंतरवैयक्तिक संचार और प्रभाव द्वारा होता है। कई स्थितियों में मास मीडिया का संदेश विभिन्न समूहों और व्यक्तियों से छनकर जाने के दौरान अपेक्षाकृत ज्यादा प्रभावी सिद्ध होता है।

श्राम का 'जनसंचार' प्रतिरूप

- जनसंचार के इस प्रक्रिया में उस संदेश का जो प्रभाव पड़ता है वह कोई जरूरी नहीं कि मास मीडिया के द्वारा प्रारंभ में जो संदेश भेजा गया था ठीक वही हो बल्कि यह बदल भी जाता है।
- मीडिया संगठन को मास ऑडियंस से और अपने समाचार स्त्रोत से भी फीडिबैक अथवा प्रतिपुष्टि मिलती है।
- विल्बर श्राम के इस प्रतिरूप में जनसंचार को समाज के एक अभिन्न अंग के रूप में देखा गया है। श्राम मास ऑडियंस को आपस में अंतःक्रिया करने वाले व्यक्तियों एवं समूहों के तौर पर देखते हैं।

श्राम का 'जनसंचार' प्रतिरूप

- विल्बर श्राम के मास ऑडियन्स आपस में सूचनाओं और विचारों के आदान–प्रदान करने वाले व्यक्ति एवं समूह हैं जो जनमाध्यमों से प्राप्त संदेश पर आपस में विचार विमर्श करते हैं और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।
- परन्तु इस प्रतिरूप में मीडिया संगठन के अंदर डिकोडिंग, इंटरप्रेटिंग और इनकोडिंग की प्रक्रिया अपेक्षाकृत ज्यादा जटिल होती है। श्राम ने अपने इस प्रतिरूप में इस जटिलता पर ध्यान नहीं दिया।